॥ युधिष्ठिरकृतं दुर्गादेव्याः स्तवनं ॥



महाभारत विराट पर्व के पांडवप्रवेश पर्व के अंतर्गत अध्याय 6 में युधिष्ठिर द्वारा दुर्गा देवी की स्तुति का वर्णन हुआ है। Essence Of Astrology ने वह स्तुति आपके लिए संकलित की है। जो मनुष्य इस उत्तम स्तोत्र को भक्तिभाव से सुनता या पढ़ता है उसके सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हो जाते हैं। भौमाश्विनी योग में इस स्तोत्र का पाठ अतिविशेष लाभदायक है।

वैशम्पायन उवाच

विराटनगरं रम्यं गच्छमानो युधिष्ठिरः ।
अस्तुवन्मनसा देवीं दुर्गां त्रिभुवनेश्वरीम् ॥
यशोदागर्भसंभूतां नारायणवरप्रियाम् ।
नंदगोपकुलेजातां मंगल्यां कुलवर्धिनीम् ॥

कंसविद्रावणकरीम् असुराणां क्षयंकरीम् ।
शिलातटविनिक्षिप्ताम् आकाशं प्रति गामिनीम् ॥

वासुदेवस्य भगिनीं दिव्यमाल्य विभूषिताम् ।
दिव्यांबरधरां देवीं खड्गखेटकधारिणीम् ॥

भारावतरणे पुण्ये ये स्मरंति सदाशिवाम् ।
तान्वै तारयते पापात् पंकेगामिव दुर्बलाम् ॥

स्तोतुं प्रचक्रमे भूयो विविधैः स्तोत्रसंभवैः ।
आमंत्र्य दर्शनाकांक्षी राजा देवीं सहानुजः ॥

नमोऽस्तु वरदे कृष्णे कुमारि ब्रह्मचारिणि ।
बालार्क सदृशाकारे पूर्णचंद्रनिभानने ॥

चतुर्भुजे चतुर्वक्त्रे पीनश्रोणिपयोधरे ।
मयूरपिच्छवलये केयूरांगदधारिणि ॥

भासि देवि यदा पद्मा नारायणपरिग्रहः ।
स्वरूपं ब्रह्मचर्ये च विशदं गगनेश्वरी ॥

कृष्णच्छविसमा कृष्णा संकर्षणसमानना ।
बिभ्रती विपुलौ बाहू शक्रध्वजसमुच्छ्रयौ ॥

पात्री च पंकजी घण्टी स्त्री विशुद्धा च या भुवि ।
पाशं धनुर्महाचक्रं विविधान्यायुधानि च ॥

कुंडलाभ्यां सुपूर्णाभ्यां कर्णाभ्यां च विभूषिता ।
चंद्रविस्पर्द्धिना देवि मुखेन त्वं विराजसे ॥

मुकुटेन विचित्रेण केशबंधेन शोभिना ।
भुजङ्गाभोगवासेन श्रोणिसूत्रेण राजता ॥

विभ्राजसे चावबद्धेन भोगेनेवेह मंदरः ।
ध्वजेन शिखिपिच्छानाम् उच्छ्रितेन विराजसे ॥

कौमारं व्रतमास्थाय त्रिदिवं पावितं त्वया ।
तेन त्वं स्तूयसे देवि त्रिदशैः पूज्यसेऽपि च ॥

त्रैलोक्य रक्षणार्थाय महिषासुरनाशिनि ।
प्रसन्ना मे सुरश्रेष्ठे दयां कुरु शिवा भव ॥

जया त्वं विजया चैव संग्रामे च जयप्रदा ।
ममापि विजयं देहि वरदा त्वं च सांप्रतम् ॥

विंध्ये चैव नगश्रेष्टे तव स्थानं हि शाश्वतम् ।
कालि कालि महाकालि खड्गखट्वाङ्गधारिणी ॥

कृतानुयात्रा भूतैस्त्वं वरदा कामचारिणि ।
भारावतारे ये च त्वां संस्मरिष्यंति मानवाः ॥

प्रणमंति च ये त्वां हि प्रभाते तु नरा भुवि ।
न तेषां दुर्लभं किंचित् पुत्रतो धनतोऽपि वा ॥

दुर्गात् तारयसे दुर्गे तत् त्वं दुर्गा स्मृता जनैः ।
कान्तारेष्ववसन्नानां मग्नानां च महार्णवे ॥
दस्युभिर्वा निरुद्धानां त्वं गतिः परमा नृणाम॥

जलप्रतरणे चैव कांतारेष्वटवीषु च ।
ये स्मरंति महादेवीं न च सीदंति ते नराः ॥

त्वं कीर्तिः श्रीर्धृतिः सिद्धिः ह्रीर्विद्या संततिर्मतिः ।
संध्या रात्रिः प्रभा निद्रा ज्योत्स्ना कांतिः क्षमा दया ॥

नृणां च बंधनं मोहं पुत्रनाशं धनक्षयम् ।
व्याधिं मृत्युं भयं चैव पूजिता नाशयिष्यसि ॥

सोऽहं राज्यात् परिभ्रष्टः शरणं त्वां प्रपन्नवान् ।
प्रणतश्च यथा मूर्ध्ना तव देवि सुरेश्वरि ॥

त्राहि मां पद्मपत्राक्षि सत्ये सत्या भवस्व नः ।
शरणं भव मे दुर्गे शरण्ये भक्तवत्सले ॥

एवं स्तुता हि सा देवी दर्शयामास पांडवम् ।
उपगम्य तु राजानमिदं वचनमब्रवीत् ॥

देव्युवाच

शृणु राजन् महाबाहो मदीयं वचनं प्रभो ।
भविष्यत्यचिरादेव संग्रामे विजयस्तव ॥

मम प्रसादान्निर्जित्य हत्वा कौरव वाहिनीम् ।
राज्यं निष्कण्टकं कृत्वा भोक्ष्यसे मेदिनीं पुनः ॥

भ्रातृभिः सहितो राजन् प्रीतिं प्राप्स्यसि पुष्कलाम् ।
मत्प्रसादाच्च ते सौख्यम् आरोग्यं च भविष्यति ॥

ये च संकीर्तयिष्यंति लोके विगतकल्मषाः ।
तेषां तुष्टा प्रदास्यामि राज्यमायुर्वपुः सुतम् ॥

प्रवासे नगरे चापि संग्रामे शत्रुसंकटे ।
अटव्यां दुर्गकांतारे सागरे गहने गिरौ ॥

ये स्मरिष्यंति मां राजन् यथाहं भवता स्मृता ।
न तेषां दुर्लभं किंचिदस्मिन् लोके भविष्यति ॥

इदं स्तोत्रवरं भक्त्या शृणुयाद् वा पठेत वा ।
तस्य सर्वाणि कार्याणि सिद्धिं यास्यंति पाण्डवाः॥

मत्प्रसादाच्च वः सर्वान् विराटनगरे स्थितान् ।
न प्रज्ञास्यंति कुरवो नरा वा तन्निवासिनः ॥

इत्युक्त्वा वरदा देवी युधिष्ठिरमरिंदमम् ।
रक्षां कृत्वा च पांडूनां तत्रैवांतरधीयत ॥

वैशम्पायन जी कहते हैं- राजन! विराट के रमणीय त्रिभुवन की अधीष्वरी दुर्गादेवी का युधिष्ठिर इस प्रकार स्तवन किया । 'जो यशोदा के गर्भ से प्रकट हुई है, जो भगवान नारायण को अत्यन्त प्रिय है, नन्दगोप के कुल में जिसने अवतार लिया है, जो सबका मंगल करने वाली तथा कुल को बढ़ाने वाली है, जो कंस को भयभीत करने वाली और असुरों का संहार करने वाली है, कंस के द्वारा पत्थर की शिला पर पटकी जाने पर जो आकाश में उड़ गयी थी, जिसके अंग दिव्य गन्धमाला एवं आभूषण्धों से विभूषित हैं, जिसने दिव्य वस्त्र धारण कर रक्खा है, जो हाथों में ढाल और तलवार धारण करती है, वसुदेवनन्दन श्रीकृष्ण की भगिनी उस दुर्गा देवी का मैं चिन्तन करता हूँ । 'पृथ्वी का भार उतारने वाली पुण्यमयी देवी ! तुम सदा सबका कल्याण करने वाली हो। जो लोग तुम्हारा स्मरण करते हैं, निश्चय कह तुम उन्हें पाप और उसके फलस्वरूप होने वाले दुःख से उबार लेती हो; ठीक उसी तरह, जैसे कोई पुरुष कीचड़ में फँसी हुई गाय का उद्धार कर देता है'। तत्पश्चात् भाइयों सहित राजा युधिष्ठिर देवी के दर्शन की अभिलाषा रखकर नाना प्रकार के स्तुतिपरक नामों द्वारा उन्हें सम्बोधित करके पुनः उनकी स्तुति प्रारम्भ की- 'इच्छानुसार उत्तम वर देने वाली देवि ! तुम्हें नमसकार है। सच्चिदानन्दमयी कृष्णे ! तुम कुमारी और ब्रह्मचारिणी हो। तुम्हारी अंगकान्ति प्रभातकालीन सूर्य के सदृश लाल है। तुम्हारा मुख पूर्णिमा के चन्द्रमा की भाँति आल्हाद प्रदान करने वाला है। 'तुम चार भुजाओं से सुशोभित विष्णुरूपा और चार मुखों से अलंकृत हो। तुम्हारे निम्ब और उरोज पीन हैं। तुमने मोरपंख कंगन धारण किया है तथा केयूर और अंगद पहन रक्खे हैं। देवि ! भगवान नारायण की धर्मपत्नी लक्ष्मी के समान तुम्हारी शोभा हो रही है। आकाश में विचरने वाली देवि ! तुम्हारा स्वरूप और ब्रह्मचर्य परम उज्ज्वल हैं। श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण की छवि के समान तुम्हारी श्याम कान्ति है, इसीलिये तुम कृष्णा कहलाती हो। तुम्हारा मुख संकर्षण के समान है। 'तुम (वर और अभय मुद्रा धारण करने वाली) ऊपर उठी हुई दो विशाल भुजाओं को इन्द्र की ध्वजा के समान धारण करती हो। तुम्हारे तीसरे हाथ में पात्र, चैथे में कमल आर पाँचवें में घण्टा सुशोभित है। छठे हाथ में पाश, सातवें में धनुष तथा आठवें में महान् चक्र शोभा पाता है। ये ही तुम्हारे नाना प्रकार के आयुध हैं। इस पृथ्वी पर स्त्री का जो विशुद्ध स्वरूप है, वह तुम्हीं हो। मुण्डलमण्डित कर्णयुगल तुमहारे मुखमण्डल की शोभा बढ़ाते हैं। देवि ! तुम चन्द्रमा से होड़ लेने वाले मुख से सुशोभित होती हो। तुम्हारे मस्तक पर विचित्र मुकुट है। बँधे हुए केशों की वेणी साँप की आकृति के समान कुछ और ही शोभा दे रही है। यहाँ कमर में बँधी हुई सुन्दर करधनी के द्वारा तुम्हारी ऐसी शोभा हो रही है, मानो नाग से लपेटा हुआ मगरमच्छ हो। 'तुमहारी मयूरपिच्छ से चिन्हित ध्वजा आकाश में ऊँची फहरा रही है। उससे तुम्हारी शोभा और भी बढ़ गयी है। तुमने ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके तीनों लोकों को पवित्र कर दिया है। 'देवि ! इसीलिये सम्पूर्ण देवता तुम्हारी स्तुमि और पूजा भी करते हैं। तीनों लोकों की रक्षा के लिये महिषासुर का नाश करने वाली देवेश्वरी ! मुझपर प्रसन्न होकर दया करो। मेरे लिये कल्याणमयी हो जाओ। 'तुम जया और विजया हो, अतः मुझे

भी विजय दो। इा समय तुम मेरे लिये वरदायिनी हो जाओ। 'पर्वतों में श्रेष्ठ विन्ध्याचल पर तुम्हारा सनातन निवास स्थान है। काली ! काली !! महाकाली !!! तुम खंग और खट्वांग धारण करने वाली हो। 'जो प्राणी तुम्हारा अनुसरण करते हैं, उन्हें तुम मनोवान्छित वर देती हो। इच्छानुसार विचरने वाली देवि ! जो मनुष्य अपने ऊपर आये हुए संकट का भार उतारने के लिये तुम्हारा स्मरण करते हैं तथा मानव प्रतिदिन प्रातःकाल तुम्हें प्रणाम करते हैं, उनके लिये इस पृथ्वी पर पुत्र अथवा धन-धान्य आदि कुछ भी दुर्लभ नहीं है। 'दुर्गे ! तुम दुःसह दुःख से उद्धार करती हो, इसीलिये लोगों के द्वारा दुर्गा कही जाती हो। जो दुर्गम वन में कष्ट पा रहे हों, महासागर में डूब रहे हों अथवा लुटेरों के वश में पडत्र गये हों, उन सब मनुष्यों के लिये तुम्हीं परम गति हो- तुम्हीं उन्हें संकट से मुक्त कर सकती हो। महादेवि ! पानी में तैरते समय, दुर्गम मार्ग में चलते समय और जंगलों में भटक जरने पर जो तुम्हारा स्मरण करते हैं, वे मनुष्य क्लेश नहीं पाते। तुम्हीं कीर्ति, श्री, धृति, सिद्धि, लज्जा, विद्या, संतति, मति, संध्या, रात्रि, प्रभा, निद्रा, ज्यात्स्ना, कान्ति, क्षमा और दया हो। तुम पूजित होने पर मनुष्यों के बन्धन, मोह, पुत्रनाश और धननाश का संकट, व्याधि, पृत्यु आर सम्पूर्ण भय नष्टकर देती हो। मैं भी राज्य से भ्रष्ट हूँ, इसलिये तुम्हारी शरण में आया हूँ। 'कमलदल के समान विशाल नेत्रों पाली देवि ! देवेश्वरी ! मैं तुम्हारे चरणों में मस्तक रखकर प्रणाम करता हूँ। मेरी रक्षा करो। सत्ये ! हमारे लिये वस्तुतः सत्यस्वरूपा बनो- अपनी महिमा को सत्य कर दिखाओ। 'शरणागतों की रक्षा करने वाली भक्तवत्सले दुर्गे ! मुझे शरण दो।' इस प्रकार स्तुति करने पर देवि दुर्गा ने पाण्डुनन्दन युधिष्ठिर को प्रत्यक्ष दर्शन दिया तथा राजा के पास आकर यह बात कही। देवी बोली- महाबाहु राजा युधिष्ठिर ! मेरी बात सुनो। समर्थ राजन् ! शीघ्र ही तुम्हें संग्राम में विजय प्रापत होगी। मेरे प्रसाद से कौरवसेना को जीतकर उसका संहार करके तुम निष्कण्टक राज्य करोगे और पुनः इस पृथ्वी का सुख भोगोगे। राजन् ! तुम्हें भाइयों सहित पूर्ण प्रसन्नता प्राप्त होगी। मेरी कृपा से तुम्म्हें सुख और आरोग्य सुलभ होगा। लोक में जो मनुष्य मेरा कीर्तन आर स्तवन करेंगे, वे पाप-रहित होंगे और मैं संतुष्ट होकर उन्हें राज्य, बड़ी आयु, नीरोग शरीर और पुत्र प्रदान करूँगी। राजन् ! जैसे तुमने मेरा स्मरण किया है, इसी प्रकार जो लोग परदेश में रहते समय, नगर में, युद्ध में? शत्रुओं द्वारा संकट प्राप्त होने पर, घने जगलों में, दुर्गम मार्ग में, समुद्र में तथा गहन पर्वत पर भी मेरा स्मरण करेंगे, उनके लिये इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं होगा। पाण्डवों ! जो इस उत्तम स्तोत्र को भक्तिभाव से सुनेगा या पढ़ेगा, उसके सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हो जायँगे। मेरे कृपाप्रसाद से विराटनगर में रहते समय तुम सब लोगों को कौरवगण अथवा उस नगर के निवासी मनुष्य नहीं पहचान सकेंगे। शत्रुओं का दमन करने वाले राजा युधिष्ठिर से ऐसा कहकर वरदायिनी देवी दुर्गा पाण्डवों की रक्षा का भार ले वहीं अन्तर्ध्यान हो गयीं।

Essence Of Astrology

- By Lokesh Agrawal

http://essenceofastro.blogspot.com/

https://www.facebook.com/essenceofastro